डॉ. जेम्स एस. स्पीगल, ईसाई नैतिकता , सत्र 12, प्रजनन तकनीक

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स एस. स्पीगल द्वारा ईसाई नैतिकता पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 12 है, प्रजनन तकनीकें।

ठीक है, अगला मुद्दा जिस पर हम चर्चा करेंगे वह है प्रजनन तकनीकें।

हमारे समय में कई नैतिक मुद्दे हैं जो कुछ खास तकनीकों के विकास के साथ उठने वाले नैतिक सवालों के कारण उभरे हैं। और यह प्रजनन तकनीकों के मामले में सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण है। तो, आइए इस्तेमाल की जाने वाली कुछ विधियों के अवलोकन से शुरुआत करें।

जिसे पहले कृत्रिम गर्भाधान के नाम से जाना जाता था, उसे अब आम तौर पर अंतर्गर्भाशयी गर्भाधान या IUI कहा जाता है। यह एक महिला के गर्भाशय में पुरुष के शुक्राणु का कृत्रिम सम्मिलन है। गैमेट इंट्राफैलोपियन ट्रांसफर, जिसे GIFT के नाम से भी जाना जाता है, में महिला से कई अंडे निकाले जाते हैं और फिर पुरुष के शुक्राणु के साथ महिला की फैलोपियन ट्यूब में रखे जाते हैं।

इन विट्रो फर्टिलाइजेशन, जो कि थोड़ा ज़्यादा मशहूर है, IVF के साथ, प्रयोगशाला में अंडों को निषेचित किया जाता है, और फिर जो भ्रूण बनते हैं उन्हें गर्भाशय में प्रत्यारोपित किया जाता है। या ZIFT नामक किसी चीज़ में, भ्रूण को फैलोपियन ट्यूब में प्रत्यारोपित किया जाता है। या युग्मनज को फैलोपियन ट्यूब में प्रत्यारोपित किया जाएगा।

और फिर, सरोगेट मातृत्व में, एक तीसरी महिला का उपयोग बच्चे को गर्भ में रखने के लिए किया जाता है, जो किसी भी कारण से, दूसरी महिला नहीं कर सकती। सरोगेट को IUI या IVF के माध्यम से गर्भवती किया जाता है और फिर वह बच्चे को गर्भ में रखती है, जो कि वह आनुवंशिक रूप से संबंधित हो सकती है या नहीं भी हो सकती है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि कौन से अंडे का उपयोग किया जाता है। तो, इन मुद्दों पर हमारा दृष्टिकोण क्या होना चाहिए? उपयोगितावादी या कांटियन के अनुसार, हमें केवल भविष्य की खुशी पर विचार करने की आवश्यकता है या, मुझे खेद है, हमें केवल शामिल लोगों की खुशी या आनंद पर विचार करने की आवश्यकता है, जो कि माता, पिता, सरोगेट होंगे यदि हम सरोगेट मातृत्व के बारे में बात कर रहे हैं।

और हम पैदा होने वाले बच्चे के भविष्य की खुशी या आनंद को भी ध्यान में रख सकते हैं। कांटियन नैतिकता के मामले में, हम शामिल लोगों की स्वायत्तता, व्यक्तियों के प्रति सम्मान, इत्यादि पर विचार करते हैं। और क्या हम इस अभ्यास को सार्वभौमिक बना सकते हैं? लेकिन एक ईसाई दृष्टिकोण से, हमें अन्य अभ्यासों पर भी विचार करने की आवश्यकता है।

स्कॉट रे कुछ नैतिक मानदंड प्रदान करने में सहायक हैं जो विचार करने योग्य हैं और विभिन्न अन्य विचार हैं। एक यह है कि चिकित्सा प्रौद्योगिकी एक उपहार है। आप जानते हैं, हम ईश्वरीय छवि के वाहक हैं।

हम रचनात्मक और नवोन्मेषी हैं। और एक चीज़ जो मनुष्य, ईश्वरीय छवि के वाहक के रूप में, करने की क्षमता रखते हैं, वह है सभी प्रकार की तकनीकें बनाना। तो यह ईश्वर का आशीर्वाद है, अन्य चीजें समान होने पर।

प्रौद्योगिकी का उपयोग अच्छे या बुरे के लिए किया जा सकता है। और जब हम इस तरह के मुद्दों पर नैतिक रूप से चिंतन करते हैं, तो हम अपनी प्रौद्योगिकी का उपयोग बुराई के बजाय नैतिक भलाई के लिए करने का प्रयास करते हैं। दूसरे, भगवान ने प्रजनन को विषमलैंगिक, एकल विवाह के संदर्भ में होने के लिए डिज़ाइन किया था।

हम इस बारे में एक अलग व्याख्यान में बात करेंगे। मानव कामुकता, मानव कामुकता से संबंधित नैतिक प्रश्न। तीसरा, जीवन की पवित्रता और अजन्मे बच्चे की नैतिक स्थिति महत्वपूर्ण विचार हैं।

ईसाई दृष्टिकोण से, हम मानव जीवन की पवित्रता में विश्वास करते हैं, कि सभी मानव जीवन पवित्र हैं क्योंकि मनुष्य ईश्वर की छवि में बनाए गए हैं, जैसा कि हमें उत्पत्ति 1 में बताया गया है। और जैसा कि हमने गर्भपात पर अपनी चर्चा में कहा, बाइबिल के दृष्टिकोण से, अजन्मे बच्चे एक पवित्र जीवन है। मानव जीवन की पवित्रता का सिद्धांत अजन्मे बच्चे पर लागू होता है। इसलिए इसे ध्यान में रखना चाहिए।

चौथा, इनमें से किसी भी प्रजनन तकनीक को चुनने के बजाय गोद लेना एक महत्वपूर्ण विकल्प है। यह निश्चित रूप से उन लाखों जोड़ों के लिए एक वरदान है जो गोद लेने का विकल्प चुनते हैं। यह एक बहुत ही मुक्तिदायक काम है, खासकर तब जब कोई जोड़ा ऐसे बच्चे को गोद लेता है जिसकी अन्यथा अच्छी तरह से देखभाल नहीं की जा सकती।

और किसी भी मामले में, बच्चे भगवान की ओर से एक उपहार हैं। जब भी प्रजनन क्रिया के माध्यम से बच्चे का प्राकृतिक उत्पादन होता है, तो यह भगवान की ओर से एक उपहार है। यह कुछ ऐसा है जो वह करता है, खासकर प्रत्येक गर्भ के भीतर जब एक बच्चा बनाया जाता है।

और अंत में, आस्था का गुण। यह निश्चित रूप से उन कई जोड़ों के लिए आस्था की परीक्षा है जिन्हें गर्भधारण करने में कठिनाई हो रही है। और यह एक अवसर भी है।

मुझे यकीन है कि ज़्यादातर लोग इसे इस तरह से नहीं देखते। यह एक ऐसा समय है जब कोई व्यक्ति आस्था में बढ़ सकता है और परमेश्वर की संप्रभुता पर भरोसा कर सकता है। हालाँकि, कई जोड़ों के लिए यह एक बहुत ही कठिन चुनौती है।

आप जानते हैं, हमें किस बिंदु पर अपना खुद का बच्चा पैदा करने का प्रयास छोड़ देना चाहिए, चाहे इस तरह की तकनीकों के माध्यम से या अन्य तरीकों से? हमें किस बिंदु पर गोद लेने का प्रयास करना चाहिए या भगवान के सामने आत्मसमर्पण कर देना चाहिए कि बच्चे पैदा करना

भगवान की इच्छा नहीं है? मेरे चर्च के पादरी या मैं एक सदस्य हूँ, और वह और उनकी पत्नी गर्भधारण करने में असमर्थ थे। इसलिए, किसी बिंदु पर, उन्होंने बस यह निर्णय लिया कि, ठीक है, हमारे अपने बच्चे पैदा करना भगवान की इच्छा नहीं है। किसी भी कारण से, उन्होंने गोद न लेने का फैसला किया।

लेकिन उन्होंने मंत्रालय के दूसरे रूपों पर ध्यान केंद्रित किया, अलग-अलग छात्रों का अपने घरों में स्वागत किया, उनके साथ रहे, और कभी-कभी दूसरे देशों के लोगों के साथ भी। और उन्होंने इस तरह से मंत्रालय किया है, और यह उनके लिए बहुत शक्तिशाली मंत्रालय रहा है । लेकिन यह विश्वास की एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण परीक्षा हो सकती है।

यहाँ कुछ रोमन कैथोलिक धार्मिक भेद दिए गए हैं, जिन्हें ज़्यादातर प्रोटेस्टेंट द्वारा ज़रूरी तौर पर स्वीकार नहीं किया जाता है, लेकिन निश्चित रूप से उन पर विचार करने और उन्हें गंभीरता से लेने लायक है। उनमें से एक है सेक्स और प्रजनन के बीच एकता का विचार। रोमन कैथोलिक धार्मिक परंपरा में, एक मानदंड है जिसे मान्यता दी गई है कि वैवाहिक सेक्स हमेशा प्रजनन के लिए खुला होना चाहिए।

तो इसका मतलब यह नहीं है कि आपको हर बार सेक्स करते समय बच्चे पैदा करने का इरादा रखना चाहिए। लेकिन प्रजनन के लिए खुलापन होना चाहिए, और इसका मतलब है कि कृत्रिम तरीके से प्रजनन को रोकने के लिए तकनीक और गर्भनिरोधक का इस्तेमाल न किया जाए। हालाँकि लय विधि नामक कुछ को मंजूरी दी गई है, और यह केवल आत्म-नियंत्रण के माध्यम से है, ऐसे समय में सेक्स करने से बचना जब महिला के गर्भधारण करने की अधिक संभावना हो।

लेकिन रोमन कैथोलिक परंपरा में सेक्स क्रिया और प्रजनन के बीच एक बहुत ही सघन संबंध को मान्यता दी गई है और इसकी पुष्टि की गई है, जो आम तौर पर प्रोटेस्टेंट के मामले में होता है। और फिर, रोमन कैथोलिक परंपरा में प्रौद्योगिकी की उचित भूमिका के संदर्भ में, चिकित्सा प्रौद्योगिकी को ऐसी चीज़ के रूप में मान्यता दी गई है जो सामान्य संभोग में सहायता कर सकती है, लेकिन इसकी जगह नहीं ले सकती। इसलिए, इनमें से कुछ प्रजनन तकनीकों के लिए इसके निहितार्थ हैं।

यहाँ कुछ नैतिक मुद्दे दिए गए हैं जो इन प्रजनन तकनीकों में से कुछ के संदर्भ में उठते हैं। अंतर्गर्भाशयी गर्भाधान और इन विट्रो फर्टिलाइजेशन, साथ ही GIFT, GIFT, IVF के मामलों में ओव्यूलेशन दवाओं का उपयोग, लेकिन कभी-कभी IUI में भी, इन तरीकों से कई बार कई बार चार, पाँच, छह बच्चे पैदा होने का जोखिम होता है, जो माँ और बच्चों दोनों के लिए एक बड़ा जोखिम होता है, और बच्चों की जान जाने की संभावना भी अधिक होती है। यह एक मुश्किल सवाल है क्योंकि जब, मान लीजिए, इन विट्रो फर्टिलाइजेशन किया जाता है, तो यह महंगा होता है।

आप इसके लिए हजारों डॉलर खर्च कर रहे हैं, और जब आपके पास ये भ्रूण होते हैं, तो उन्हें प्रत्यारोपित करना होता है; यह प्रक्रिया भी महंगी है। इसलिए, आप अपने पैसे से अधिकतम लाभ प्राप्त करना चाहते हैं, इसलिए यह इस उम्मीद के साथ अधिक संख्या में भ्रूण डालने का प्रोत्साहन

है कि कम से कम एक प्रत्यारोपण हो। लेकिन इन विट्रो निषेचन की प्रक्रिया और इन सभी भ्रूणों के उत्पादन के माध्यम से, यह नियमित रूप से होता है कि कुछ भ्रूण बच जाते हैं और ऐसे भ्रूण होते हैं जिनकी आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि अब, मान लीजिए, दंपति ने इस प्रक्रिया को दो, तीन बार पूरा कर लिया है, और उन्हें अन्य भ्रूणों का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं है जिन्हें अब कोल्ड स्टोरेज में रखा जा रहा है।

तो, उनके साथ क्या किया जाए? उन्हें बस नष्ट किया जा सकता है, दान किया जा सकता है, या अनिश्चित काल तक संग्रहीत किया जा सकता है, या स्टेम सेल अनुसंधान जैसे प्रयोगात्मक उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है, जिसका कई लोग समर्थन करते हैं। यहाँ आर्थिक रूप से जोखिम भरा समाधान यह है कि आप जितने भ्रूण को गर्भ में धारण करने के लिए तैयार हैं, उससे अधिक भ्रूण न बनाएँ। इस बारे में पहले भी कई जोड़ों ने मुझसे सलाह ली है, और मुझे एक ऐसा मामला याद है जहाँ मुझसे यह सवाल पूछा गया था, यह जानते हुए कि यह एक चिंता का विषय था।

वे एक युवा ईसाई दंपत्ति थे, और वे इस संभावना से चिंतित थे कि भ्रूण का उपयोग न होने के कारण वे मर जाएंगे। वे इस पर विश्वास करते हैं, है न? ये मानव व्यक्ति हैं जिन्हें जीवन का अधिकार है। इसलिए, मेरी उनसे सिफारिश थी कि वे जो भी भ्रूण बनाते हैं या जो इन विट्रो फर्टिलाइजेशन के माध्यम से गर्भाधान करते हैं, उनका उपयोग करें और उन सभी को प्रत्यारोपित करें ताकि वे सभी प्रत्यारोपित हो सकें और समय पर जन्म ले सकें।

और मुझे नहीं पता कि उन्होंने कितने प्रत्यारोपण किए, लेकिन मुझे पता है कि यह कई प्रत्यारोपणों के माध्यम से हुआ, वे एक बार में लगभग तीन या चार प्रत्यारोपण करते थे, और वे निश्चित रूप से उन सभी को प्रत्यारोपित करने के लिए तैयार थे। अगर ऐसा हर बार होता तो शायद उनके 15 या 16 बच्चे होते। जैसा कि हुआ, मुझे लगता है कि यह तीन अलग-अलग बार सफल रहा।

उन्होंने सभी भ्रूण प्रत्यारोपित कर दिए, इसलिए उनमें से कोई भी कोल्ड स्टोरेज में नहीं छोड़ा गया, और उन्हें इस बात की चिंता नहीं करनी पड़ी कि अन्य भ्रूणों का क्या किया जाए जो अप्रयुक्त थे क्योंकि वे सभी उपयोग किए जा चुके थे। और अब मुझे लगता है कि उनके लगभग चार बच्चे हैं। हो सकता है कि यह उनके द्वारा अन्यथा सोचे गए परिवार से बड़ा हो, लेकिन उनका दृढ़ विश्वास था कि मानव जीवन की पवित्रता के सम्मान के लिए, हम यही करने जा रहे हैं, भले ही इसका मतलब यह हो कि हमारे आठ या नौ बच्चे हों।

तो, यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसकी मैंने कुछ हद तक संस्तुति की है। कुछ समर्थक जीवन-समर्थक तो इस हद तक भी नहीं जाएंगे, और वे इस पद्धति के इस्तेमाल से पूरी तरह से परहेज करेंगे। लेकिन यही वह दृष्टिकोण है जिसकी मैंने संस्तुति की है।

अब, सरोगेट मातृत्व के संबंध में, यह कहीं अधिक समस्याग्रस्त है। जब आप प्रजनन की प्रक्रिया में किसी तीसरे पक्ष को शामिल करते हैं, तो सरोगेट मातृत्व के खिलाफ कुछ मानक तर्क दिए गए हैं। एक यह है कि यह शोषणकारी है, यह शिशुओं को माल में बदल देता है क्योंकि यह अक्सर

लाभ के लिए किया जाता है जहां सरोगेट मां को इस बच्चे को गर्भ में रखने के लिए एक निश्चित राशि, यहां तक कि तीस चालीस हजार डॉलर का भुगतान किया जाता है।

ऐसा उन परिस्थितियों में नहीं होगा, जहाँ, मान लीजिए, जो महिला बच्चे को गर्भ में नहीं रख सकती, उसने अपनी बहन से सरोगेट बनने के लिए कहा है। कई बार ऐसा परिवारों में होता है। इसलिए आपको वहाँ लाभ की चिंता या उद्देश्य नहीं होता, लेकिन जहाँ यह शामिल होता है, वहाँ आपको शोषण की चिंता होती है जो मुझे लगता है कि महत्वपूर्ण है।

दूसरा तर्क यह है कि सरोगेट मातृत्व एक महिला को उसके शरीर से अलग होने की अनुमति देकर एक बुराई को एक गुण में बदल देता है। इसलिए, कुछ कानून वास्तव में इस तरह से लिखे जाएंगे कि सरोगेट्स को मानव इनक्यूबेटर के रूप में संदर्भित किया जाएगा। आमतौर पर यह समझा जाता है कि एक माँ की ओर से अपने बच्चे से भावनात्मक रूप से अलग होना एक बुराई है, लेकिन इस मामले में बिल्कुल यही चाहिए, ताकि सरोगेट माँ इस बच्चे को आसानी से छोड़ दे जिसे उसने अभी-अभी जन्म दिया है।

तो, क्या ऐसी प्रथा जो किसी बुराई को सद्गुण में बदल देती है या बुराई को सद्गुण मानती है, उस कारण से नैतिक रूप से संदिग्ध नहीं है? कई मामलों में, सरोगेट अपना मन बदल लेती है और बच्चे से भावनात्मक रूप से इतनी जुड़ जाती है कि वह उसे छोड़ना नहीं चाहती, और इससे सरोगेट मातृत्व के मामलों में कई संघर्ष और जटिलताएँ पैदा हो सकती हैं और हुई भी हैं। इससे एक और सवाल उठता है। हमें सरोगेट के अपने बच्चे के संबंध में कौन से अधिकार, यदि कोई हों, को मान्यता देनी चाहिए? यह समझना आसान नहीं है।

यह बहुत जटिल हो जाता है। और फिर, आपके पास इससे जुड़ी कई व्यावहारिक समस्याएं हैं, जिसमें भावनात्मक संकट भी शामिल है, भले ही वह बच्चे को छोड़ने का फैसला करे। कुछ मामलों में, इसका स्थायी नकारात्मक भावनात्मक प्रभाव पड़ता है।

तो यहाँ कुछ निष्कर्षात्मक प्रश्न हैं जो हम पूछ सकते हैं। क्या रोमन कैथोलिक हमेशा से सही रहे हैं कि समस्या लिंग और प्रजनन के बीच मजबूत अलगाव में है? क्या विवाहित जोड़ों को इस कारण से गर्भधारण की संभावना के लिए हमेशा खुला रहना चाहिए? प्रोटेस्टेंट दुनिया में, इवेंजेलिकल्स के बीच, पिछले 50 या 60 वर्षों में चीजें नाटकीय रूप से बदल गई हैं, खासकर गर्भनिरोधक गोली के आगमन के साथ, जो, जब 1960 के दशक की शुरुआत में गर्भनिरोधक गोली पहली बार बाजार में आई थी, मैंने पढ़ा है कि 95% इवेंजेलिकल्स इसके खिलाफ थे, जो दिलचस्प है क्योंकि अब संख्या शायद उलट होगी। इवेंजेलिकल्स का मजबूत बहुमत गर्भनिरोधक गोली के साथ ठीक होगा, और यह दर्शाता है कि इस विशेष अभ्यास ने इवेंजेलिकल समुदाय के दृष्टिकोण को कितना प्रभावित किया है।

लेकिन जाहिर है, 60 के दशक में बहुत से इवेंजेलिकल ने सेक्स और प्रजनन के बीच एक तरह के प्राकृतिक संबंध को पहचाना था, जिसे आप जानते हैं, जन्म नियंत्रण की गोली का विचार विरोधाभासी था। और यह बहुत सी चीजों के साथ सच है, ठीक है, ये सांस्कृतिक विकास की तरह हैं जो पहले तो चौंका देने वाले होते हैं, और फिर हम इस विचार के आदी हो जाते हैं। मुझे पता है

कि बिकनी स्विमिंग सूट लगभग उसी समय पेश किया गया था, और यह ईसाइयों के बीच काफी बदनामी थी, मूल रूप से सिर्फ अंडरवियर को रंगना और फिर इसे वैध स्विमसूट पोशाक के रूप में पेश करना, और अब आप बिकनी के बारे में बहुत अधिक शिकायतें नहीं सुनते हैं।

इसलिए, हम किसी तरह से चीजों के आदी हो सकते हैं और इस कारण से, किसी भी तरह की नैतिक शंकाओं को खो सकते हैं, जबकि हम जानते हैं कि वे वास्तव में नैतिक रूप से समस्याग्रस्त हैं। एक और सवाल: किस बिंदु पर प्रजनन समस्याओं से निपटने की वित्तीय और भावनात्मक लागत निषेधात्मक होती है? जोड़ों को क्या करना चाहिए , या कब जोड़ों को इसके बजाय गोद लेने का विकल्प चुनना चाहिए? किस बिंदु पर आप बस यह कहते हैं, यह वास्तव में बहुत जोखिम भरा है, बहुत महंगा है, चलो गोद लेते हैं। बेशक, गोद लेना आम तौर पर बहुत महंगा हो जाता है।

तो, किस बिंदु पर वित्तीय प्रतिबद्धताएँ बहुत ज़्यादा हो जाती हैं? और इनमें से किसी की लागत कब यह सुझाव दे सकती है कि यह वास्तव में ईश्वर की इच्छा है कि, आप जानते हैं, कि दंपति के कोई बच्चे न हों या उनके और बच्चे न हों? मुझे पता है कि मेरे पादरी के मामले में, मुझे यकीन है कि वित्तीय आयाम या, आप जानते हैं, महत्वपूर्ण विचार उनके इस निष्कर्ष पर पहुँचने में महत्वपूर्ण थे कि यह ईश्वर की इच्छा थी कि वे बच्चे न पैदा करें। एक और सवाल जो हम पूछ सकते हैं, वह यह है कि क्या हम अपने समाज में बच्चों को भगवान का आशीर्वाद मानने से हटकर उन्हें बोझ या अधिकार के रूप में देखने लगे हैं? कई प्रो- चॉइसर्स के बीच , कम से कम कई मामलों में, एक प्रचलित दृष्टिकोण है कि बच्चे एक बोझ हैं। मैं कई साल पहले एक सम्मेलन में था जहाँ गर्भपात पर एक पेपर प्रस्तुत किया जा रहा था, और आगामी चर्चा में, दर्शकों में से एक महिला ने गर्भधारण की तुलना एक यातायात दुर्घटना से की।

अगर उसे पता चलता है कि उसने एक बच्चे को जन्म दिया है, तो वह इसे, आप जानते हैं, एक यातायात दुर्घटना के समान कुछ समझेगी, जिससे मुझे आश्चर्य हुआ कि वह मेरे खुद के गर्भाधान के बारे में क्या कहेगी, जो एक शुक्राणुनाशक के विफल होने के परिणामस्वरूप हुआ। मैं, आप जानते हैं, उसके मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के संदर्भ में एक यातायात दुर्घटना के उत्पाद के बराबर हूँ। लेकिन यह बच्चों को एक बोझ, प्रसव और गर्भाधान को एक बोझ के रूप में देखना होगा।

जो लोग बच्चों को एक अधिकार के रूप में देखते हैं, आप जानते हैं, वे एक बहुत ही अलग दृष्टिकोण रखते हैं, और यह एक आम दृष्टिकोण भी है, और यह इन प्रजनन तकनीकों के प्रति शायद एक तरह का गैर-आलोचनात्मक दृष्टिकोण भी प्रभावित करता है, जिस पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। इसलिए एक समाज के रूप में या व्यक्तिगत ईसाई के रूप में बच्चे के जन्म के प्रति हमारा दृष्टिकोण और हमें इसे कैसे देखना चाहिए, इसका प्रजनन तकनीकों के इस मुद्दे पर हमारे दृष्टिकोण पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

यह डॉ. जेम्स एस. स्पीगल द्वारा ईसाई नैतिकता पर उनके शिक्षण में दिया गया है। यह सत्र 12 है, प्रजनन तकनीक।